संदेश आत्मा, बोकारो

सफलता की कहानी– किसान की जुबानी

सब्जी की व्यवसायिक खेती किसानों के लिए वरदान :– सुगनचन्द महतो

मैं, सुगनचन्द महतो, बोकारो जिले के पेटरवार प्रखंड के दारिद पंचायत अन्तर्गत लुकैया ग्राम का वासी हूँ। मेरे पिता श्री रामलाल महतो के नाम से 2 एकड़ जमीन थी। उन्होंने अपना 40 (चालीस) डिसमिल खेत बटाई पर दे रखा था। शेष 1.60 एकड़ पर कोई खेती नहीं होती थी। वर्षो से खेती नहीं होने के कारण भी की उर्वरा शक्ति भी क्षीण हो गई थी।

वर्ष 1996 में मैट्रिक करने के बाद आर्थिक तंगी के कारण आगे की पढ़ाई नहीं कर सका। एक बार तो विचार आया कि परिवार के भरण–पोषण हेतु राज्य के बाहर मजदूरी के लिए जाउँ। पर लुकैया गांव के मिट्टी से लगाव के कारण काफी मंथन के बाद मैंने निर्णय लिया कि गांव में उपलब्ध जमीन पर ही खेती करूँगा। इसके लिए पिताजी के 2 एकड़ जमीन के अलावे 4 एकड़ टांड़ जमीन बटाईदारी पर लिया। शुरू में 40 डिसमिल जमीन पर गेंहूँ की खेती तथा शेष में सब्जी की व्यवसायिक खेती के लिए टमाटर, गोभी, फूलगोभी, बैंगन, मिर्च आदि की खेती की। प्रारंभिक दौर में बहुत ज्यादा लाभ नहीं हुआ क्योंकि वर्षों बाद इन खेतों में कृषि प्रारंभ की गई। परन्तु जैसे–जैसे वैज्ञानिक खेती के लिए आत्मा, बोकारो से प्रत्यक्षण के माध्यम से उन्नत किस्म के सब्जी बीज, मृदा सुधारक डोलोमाईट, कीटनाशक, सूक्ष्मपोषक तत्व तथा स्प्रेयर मशीन आदि प्राप्त हुआ वैसे–वैसे लाभ में उत्तरोतर वृद्धि होते गया। लाभ की पूंजी एकत्रित होने पर मैनें अपने जमीन पर दो कुऑ बनवाया। एक कच्चा कुँआ तथा दूसरा पक्का कुँआ। इस प्रकार सर्वप्रथम अपने 2 एकड़ भूमि में सिंचित खेती प्रारंभ किया। सिंचित खेत में सब्जी की खेती से मेरी आय में और भी वृद्धि हुई।

उत्पादित फूलगोभी को प्रदर्शित करते हुए सुगनचन्द महतो एवं लुकैया गांव के अन्य कृषक

इसके बाद मैंने 3 एकड़ टॉड़ जमीन खरीदी भूमि को समतलीकरण कर खेती योग्य बनाया। इस पर 20 फीट का कच्चा कुँआ का निर्माण कराया। इस भूमि में भी हरी सब्जी की खेती की। अभी भी मैंने अगात गोभी का एक लाख पौधा तथा आलू 4 एकड़ में लगाया है। इससे इस वर्ष मेरी आमदनी शुद्ध 2.5 लाख रूपये होने की संभावना है। गत वर्ष 2.25 लाख रूपये का लाभ हुआ था। सरकारी सहायता तथा फसल उत्पादन से अप्रत्याशित लाभ अर्जित करने के कारण अब मैं राज्य से बाहर जाकर कमाने का विचार त्याग चुका हूँ, सच ही, सब्जी की खेती मेरे लिए वरदान साबित हुई और गॉव के लोगों की अलाभकारी कृषि की अवधारण को समाप्त करने में सहायक सिद्ध हुई।

कृषि के क्षेत्र में गांव की प्रगति को देखते हुए मुझे आत्मा, बोकारो द्वारा प्रदत्त ''कृषक पाठशाला'' का संचालक बनाया गया है। इस पाठशाला के क्रियाकलाप से इसके समीपवर्ती गांव अम्बाडीह, भंगाठ, कोजराम, दारिद, एवं जरूआटांड़ के किसान भी प्रेरित होकर सब्जी की खेती को व्यवसायिक रूप में प्रारंभ करने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि आनेवाले दिनों में यह क्षेत्र सब्जी उत्पादन का हब बनेगा।

लुकैया गांव के कृषकों द्वारा की जा रही बंधागोभी की व्यवसायिक खेती